अनुबोधन, खण्ड 1, अंक 2, जून 2025, पृष्ठ 56–61
ISSN: 3049-4184 (प्रिन्ट) 3108-1185 (ऑनलाइन)
प्रकाशित: **30 जून 2025**
जर्नल वेबसाइट: **https://anubodhan.org**

भारत नेपाल साहित्यिक संबंधों में नेपाली संस्कृत अभिलेखों का योगदान

डॉ. सोनल सिंह*

सारांश

भारत, नेपाल देश के इतिहास पर नजर डालने पर कई प्रकार के ऐसे तथ्य मिलते हैं, जिससे यह स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो जाता है कि दोनों देश प्राचीन काल से अत्यंत घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए थे वरन दोनों ही स्थानों पर एक ही समाज दिखाई देता है, इसमें एक ही अखंड भारत या नेपाल की तस्वीर दिखती है प्रस्तुत शोध लेख भारत नेपाल साहित्यिक संबंधों में नेपाली संस्कृत अभिलेखों का योगदान के संदर्भ में देखा गया है।

बीज शब्द: *भारत नेपाल साहित्यिक संबंध, स्वास्तिक, सिद्धम, ताम्रपत्राभिलेख, शिलालेख, अभिलेख*

किसी भी समय व इतिहास के अध्ययन के लिये अभिलेखों को सर्वोत्तम स्रोत माना जाता है। सामान्यतः पाषाण खण्ड, पाषाण स्तम्भ, ताम्रपत्र, धर्म स्मारक, राजमहल, मुद्रा, देवालय, स्मारक आदि पर अंकित अभिलेख किसी भी काल की राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक व सामाजिक पक्ष को दर्शाती है। अभिलेखों से न केवल राजनैतिक व प्रशासनिक जानकारी मिलती है बल्कि राजाओं की वंशावलियाँ, दानशीलता आदि का ज्ञान भी प्राप्त हो जाता है। प्राचीन भारतीय अभिलेख प्रायः ब्राह्मी, खरोष्ठी[1], नागरी लिपि में अंकित है। प्राचीन भारतीय इतिहास के निर्माण में यह अभिलेख हमेशा विश्वसनीय व अग्रणी सिद्ध होते है।

अभिलक्ष्यः लेखः अभिलेखः अर्थात किसी उद्देश्य को लेकर लिखा गया लेख अभिलेख कहा जाता है। अंग्रेजी भाषा में इसे इनस्क्रिप्शन्स (Inscriptions) कहते हैं जो इनस्क्राइब (Inscribe) धातु से बना है जिसका अर्थ है उत्कीर्ण

*सहायक निदेशक, महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

करना।[2] अंग्रेजी भाषा में उत्कीर्ण करने को ही अभिलेख कहते हैं किंतु यह अर्थ सीमित है जबकि संस्कृत में अभि उपसर्ग पूर्वक लिख धातु से निर्मित अभिलेख शब्द विस्तार की ओर अग्रसारित करता है। अभिलेख कई प्रकार के हैं जैसे नरगेल[3], लक्ष्मणेश्वर[4], प्रस्तर लेख, सिक्कों पर सांचे के माध्यम से तैयार लेख, पकाए जाने से पूर्व गीली मिट्टी पर बनाए गए लेख[5], आसपास के धरातल को हटाकर उस पर उत्कीर्ण किए गए लेख आदि लेख भी अभिलेख के अंतर्गत ही माने जाते हैं। अभिलेख की श्रेणी में उसी सामग्री को रखा जाता है जो स्थाई हो क्योंकि अस्थाई लेखन सामग्री जैसे ताणपत्र (ताड़वृक्ष के पत्तो पर रंग या स्याही से लिखि गयी सामग्री को ताड़पत्र कहते हैं), भूर्जपत्र (एक विशेष प्रकार के वृक्ष की छाल, जिस पर प्राचीन ग्रंथ लिखे जाते हैं) तथा कागज पर लिखित लेख अभिलेख नहीं माने जाते हैं। इसी तरह चिन्ह भी अभिलेख की श्रेणी में आते हैं जैसे ऊँ, स्वास्तिक तथा सिद्धम[6] आदि । अभिलेखों का समय सिंधु घाटी सभ्यता से प्राप्त होते हैं, जो तत्कालीन समय की स्थिति का स्पष्टीकरण करते हैं। भगवान बुद्ध के काल में अनेक अभिलेख उत्कीर्ण हुए वहीं संस्कृत अभिलेखों की प्राप्ति प्रथम शताब्दी से हुयी। यह देश के पश्चिमी भाग से अधिक संख्या में प्राप्त हुई तथा सातवीं शताब्दी तक शुद्ध रूप से प्राप्त हुए हैं।[7]

भारत में सम्राट हर्ष वर्धन के पश्चात भारत राजनीतिक दृष्टि कुछ अस्त-व्यस्त हो गयी थी इसलिए सातवीं आठवीं सती के अभिलेखों में उत्कृष्ट गुप्त कालीन अभिलेखन शैली का अभाव हो गया था इस उत्कृष्ट गुप्त अभिलेख शैली की परंपरा को नेपाल के राजा नरेंद्र देव, शिव देव द्वितीय एवं जयदेव द्वितीय ने अपने अभिलेखों में सुरक्षित रखा। नेपाल के लक्ष्मी वंशी राजाओं ने सन 463 ई. 747 ई. के मध्य लगभग 89 अभिलेख उत्कृण कराये, जो पाँचवीं सती से आठवीं सती के मध्य भारत नेपाल के अटूट एवं अमिट सांस्कृतिक संबंधों पर प्रकाश डालते हैं।[8]

नेपाल के लिच्छवी वंशी राजाओं ने 463 ई. से 747 ई. के मध्य लगभग 89

अभिलेख उत्कीर्ण कराये, जो पाँचवीं शती से आठवीं शती के मध्य भारत नेपाल के अटूट एवं सांस्कृतिक सम्बन्धों पर प्रकाश डालते हैं। इस तरह वहाँ के राजाओं में राजा मानदेव के ग्यारह, राजा वसन्तदेव के चार, राजा रामदेव के तीन, राजा गणदेव के तीन,राजा शिवदेव प्रथम के तेरह, राजा अंशुवर्मा के तेरह, राजा उदयदेव द्वितीय के दो, राजा ध्रुवदेव तथा विष्णुगुप्त के पाँच, राजा भिमार्जुनदेव तथा जिष्णुगुप्त के चार, राजा जिष्णुगुप्त के दो, राजा भिमार्जुनदेव तथा जिष्णुगुप्त के दो, राजा नरेन्द्रेव के बारह, राजा शिवदेव द्वितीय के चार, राजा जयदेव द्वितीय के ग्यारह, इस प्रकार कुल मिलाकर 89 अभिलेख मिलते हैं।[9]

इनमें प्रथम द्वितीय एवं उनसठ व अभिलेख स्तंभ लेख हैं। अड़सठ ताम्रपत्राभिलेख है। शेष पञ्चासी अभिलेख शिलालेख (पत्थरों पर खोदकर लिखि गई सामग्री) हैं। नेपाली अभिलेखों को विषय की दृष्टि से पाँच भागों में विभाजित किया जा सकता है।

जैसे- 1-प्रशांसात्मक अभिलेख पाँच हैं। 2-धार्मिक अभिलेख ग्यारह हैं। 3-स्मारक प्रधान अभिलेख दस हैं।

4- दान संबंधी अभिलेख आठ हैं। 5- राजाज्ञा प्रधान अभिलेख पचपन हैं।[10]

इन अभिलेखों के नाम इस प्रकार हैं।

1-छंगूनारायण स्तम्भ-अभिलेख 2-भूमिदानाज्ञाभिलेख 3-विष्णुविक्रान्तमूर्ति-अभिलेख 4-शिवलिङ्ग- स्थापना शिलालेख 5-इन्दलदेवी शिलालेख 6-पशुपति रत्नेश्वरस्थापना- दानक्षेत्र- अभिलेख 7-भगवान इन्द्र- शिलालेख 8-पशुपति जयेश्वरलिङ्ग स्थापना अभिलेख 9-छंगूनारायण पितृमूर्तिस्थापना- शिलालेख 10-देवपाटन शिवलिङ्ग- अभिलेख 11-हरिगाँव- द्वैपायन स्त्रोताभिलेख 12-आदिनारायण मन्दिर थानकोट ग्राम मर्यादाभिलेख 13-जयशीलागनटोले मर्यादा शिलालेख 14-किसीपिडी कराज्ञा शिलालेख 15-रविगुप्तकृत चौकीतर पञ्चापराध निषेधाज्ञा शिलालेख 16-शंङ्करभवन भूमिदानाभिलेख 17-देवपाटन नाथेश्वर-शिलालेख 18-अवलोकितेश्वरनाथ स्थापनाभिलेख 19-चौकीतर-अधिकरण-प्रवेश निषेधाज्ञा-शिलालेख 20-त्यागनटोले शंकरनारायणस्वामी

प्रशस्ति-अभिलेख 21-सपाली गाँव-निषेधाज्ञा- शिलालेख 22-च्यासलटोले शिलालेख 23-भीमसेन पञ्चापराधी- प्रवेश निषेधाज्ञा- शिलालेख 24-भादागाँव राजाज्ञा शिलालेख 25-भादगाँव राजाज्ञा शिलालेख 26-धर्मपुर राजाज्ञा शिलालेख 27-बुद्धानीलकण्ठ शिलालेख 28- सतुंगल वनछेदन-निषेध-शिलालेख 29-टोख भूमिमर्यादा शिलालेख 30-धर्मपुर कर-मर्यादा शिलालेख 31-खोपासी कर निर्धारण शिलालेख 32- छापागाँव -शुल्क- निर्धारण-शिलालेख 33-बनेपा मर्यादा शिलालेख 34- विक्रयनिषेध कोट्टमर्यादा –शिलालेख 35-हरिगाँव पणधिकार- शिलालेख 36- हरिगाँव -गृहक्षेत्र-दान मर्यादाभिलेख 37- करमुक्ति सांज्ञाशिलालेख 38-सुंधारापाटन जीर्णोद्धाराज्ञा-शिलालेख 39-बंगमती गाँव शूकरादि प्रवेश निषेधाज्ञा-शिलालेख 40- जयशीदेवल क्षेत्रमर्यादा- शिलालेख 41- गणेश मन्दिर सूरभोगेश्वर दक्षिणेश्वर -स्थापना- शिलालेख 42भन्साहिट्टि प्रवेश निषेधाज्ञा शिलालेख 43-मृत्युञ्जयशाला-प्रणाली- शिलालेख 44-लच्छीटोले ग्रामसीमा-शिलालेख 45-मङ्गल बाजार पाटन- शिलालेख 46-बंकाली पुण्यवृद्धि शिलालेख 47-बहिलिटोले पाटन शिलालेख 48- पानीपुखारी-प्रणाली-निर्माण- शिलालेख 49- ठीमी शिलालेख 50-छिन्नमस्तिका- तिमल संस्कार शिलालेख 51-माल्टार शिलालेख 52-मीननारायणमन्दिर पुण्यव्यवस्थभिलेख 53-आदेश्वर-नाथेश्वर-प्रतिष्ठाज्ञानाशिलालेख 54-कारणपूजादि व्यवस्था शिलालेख 55-करमुक्ति इन्द्रमति अभिलेख 56-थानकोट पुष्करिणीदानाज्ञा कर- निर्धारण-शिलालेख 57-मालीगाँव माप्चोकाधिकार शिलालेख 58-येंगाहिठि करमुक्ति शिलालेख 59-चण्डेश्वर जीर्णोद्धार भूमिदानाज्ञा स्तम्भलेख 60-कामदेवमूर्ति अभिलेख 61-लागनटोले करदण्ड-मुक्ति- शिलालेख 62-भृङ्गरेश्वर आज्ञा- शिलाललेख 63-कूप जलद्रवणी-निर्माण शिलालेख 64-करुणा डोक शिलालेख 65-देवपाटन पहाड़ी- शिलालेख 66-येंगाहिटि लागनटोले व्यग्रहार-शिलालेख 67-लुञ्ज्याधिकार कर सीमा-निर्धारण- शिलालेख 68-नारायणमन्दिर भूमि-मर्यादा ताम्रपत्राभिलेख 69-भगवती बहाल उदपान-जीर्णोद्धार-शिलालेख 70-गैरीधारा कारणपूजा शिलालेख 71-वटुक भैरव मंदिर शिलालेख 72- गणेश मन्दिर चाट -भट निषेधाज्ञा-शिलालेख 73-शिक्षुसंघ-क्षेत्र-मर्यादाभिलेख 74-शिवदेवबिहार भिक्षु

-संघ-सीमा-निर्धारण शिलालेख 75-शङ्कु भिक्षुसंघ शिलालेख 76- इन्द्रमती छात्र- रोपण-क्षेत्रमर्यादा-शिलालेख 77-लागनटोले विष्णु शिलालेख 78-सोनागूँठी निषेधाज्ञा शिलालेख 79-कोट्टमर्यादा-शिलालेख 80-मीनानाथ पाटन - मर्यादा शिलालेख 81-पशुपति वंश-प्रशस्ति-शिलालेख 82- ठीमी आज्ञाभिलेख 83- नक्साल नारायण आजीविका-निर्धारण-शिलालेख 84-नक्सालनारायण-शिलालेख 85-मीनानाथ जलाशय शिलालेख 86-बाहिलिटोले-शिलालेख 87-सौरपथ शिलालेख 88-परमसत्तभिलेख 89-छंगूनारायण-प्रवेशद्वार-शिलालेख

इस प्रकार इन अभिलेखों में सत्रह अभिलेख पूर्ण है, शेष अभिलेख न्यूनाधिक खंडित है। नवासी अभिलेख में दस अभिलेख पद्यात्मक, उनचास अभिलेख गद्यात्मक एवं तीस अभिलेख गद्य- पद्यात्मक अथवा मिश्रित हैं। इन अभिलेखों में लगभग पैसठ प्रकार के अलंकार तथा एक सौ तिरालीस पद्यो में तेरह प्रकार के छंदों का समावेश है, केवल मात्र आर्या छंद ही मात्रिक छंद है तथा सभी वर्णिक छंद है।

इन अभिलेखों के अनुशीलन से न केवल गुप्तकालीन भारत नेपाल के अटूट सांस्कृतिक संबंधों एवं आदान-प्रदान पर प्रकाश पड़ता है अपितु संस्कृत साहित्य की उत्कृष्ट विधाओं को सुरक्षित प्राचीन परंपरा का भी उद्घाटन हुआ है। सन् 464 ई. में लिखा गया राजा मानदेव का छंगू नारायण मानदेव प्रशस्ति स्तंभलेख उन्नीस शार्दूलविक्रीडित- छंदों की उत्कृष्ट संस्कृत काव्य रचना है।

इन अभिलेखों का वैशिष्ट्य यह है कि इनमें शार्दूलविक्रीणित, मालिनी, वंशस्थ, मंदाक्रान्ता प्रहर्षिणी, शिखरिणी, आर्या, उपगीति, रुचिरा, आदि छंदों का भाव भाषानुकूल प्रयोग किया गया । इन अभिलेखों में हास्य रस को छोड़कर श्रृंगार रस, करुण, वीर, वीभत्स, भयानक, रौद्र, वात्सल्य, अद्भुत ,भक्ति तथा शांत रस उपलब्ध है।[11]

इस प्रकार हम यह देख पाते है कि भारत नेपाल का सम्बन्ध न केवल राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक स्तर पर समृद्ध है वरन् साहित्यिक दृष्टि से भी नेपाल का

सम्बन्ध गहराईयों को द्योतित करता है। नेपाल की संस्कृति में जब समृद्ध संस्कृत भाषा का भान होता है, तो भारत देश गौरव की अनुभूति से भावाविभूत हुये बिना नहीं रह पाता है। हमारी संस्कृति के अंश नेपाल में इतने समृद्ध हैं इस गौरव को प्राप्त करके भारत नेपाल की सांस्कृतिक बन्धन और भी प्रगाढ़ता को प्राप्त हो जाती हैं।

संदर्भ

1. विद्धार्थी, मोहनलाल, ग्लिम्पस ऑफ इण्डियन कल्चर, शारदा पब्लिशिंग हाउस, 2003, पृ 133
2. वायल्ड, हेनरी सेसिल, यूनिवर्सल डिक्शनरी ऑफ द इंग्लिश लैंग्वेज, पृ 608
3. एपिग्राफिया इण्डिका, भाग-6
4. एपिग्राफिया इण्डिका, भाग-6
5. गोपालपुर से प्राप्त बौद्ध सूत्रों वाली ईंटे (प्रोसिडिंग्ज-एशियाटिक सोसायटी बंगाल, भाग- 65)
6. Salomon, Richard. *Indian Epigraphy: A Guide to the Study of Inscriptions in Sanskrit, Prakrit, and the Other Indo-Aryan Languages*. New York: Oxford University Press, 1998.
7. देवी, ममता, भारत के प्राचीन संस्कृत अभिलेख एक साहित्यशास्त्रीय अनुशीलन, शोध प्रबन्ध, छत्रपति शाहू जी महाराज कानपुर विश्वविद्यालय, 2011, प्रथम अध्याय, पृ 3
8. अग्रवाल, कृष्ण देव अरविन्द, इम्पॉर्टेन्स ऑफ नेपाली संस्कृत इन्क्रिप्शन्स, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली, 2010, पृ- 9
9. अग्रवाल, कृष्ण देव अरविन्द, इम्पॉर्टेन्स ऑफ नेपाली संस्कृत इन्क्रिप्शन्स, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली, 2010, पृ- 10
10. अग्रवाल, कृष्ण देव अरविन्द, इम्पॉर्टेन्स ऑफ नेपाली संस्कृत इन्क्रिप्शन्स, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली, 2010, पृ- 11
11. अग्रवाल, कृष्ण देव अरविन्द, इम्पॉर्टेन्स ऑफ नेपाली संस्कृत इन्क्रिप्शन्स, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली, 2010, पृ- 22

Copyright © 2025 Siri Research Foundation. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License (CC BY-NC-ND 4.0).